महान सभ्यताएँ
चीन

महान सभ्यताएँ

चीन

दुनिया में, चीन में हर चार में से एक इंसान रहता है और चीनी मूल के कई लोग बाकी दुनिया में भी फैले हुए हैं.

अपने लंबे इतिहास के दौरान, चीन की सभ्यता पश्चिम की तुलना में बहुत अलग रही है, अतीत में जितनी संस्कृतियां थीं, उतनी ही अब राजनीति भी है.

यह पुस्तक प्राचीन चीन के बारे में है, चीनी विचारों और आविष्कारों के बारे में है जिन्होंने तमाम मतभेदों के बावजूद हमें प्रभावित किया है.
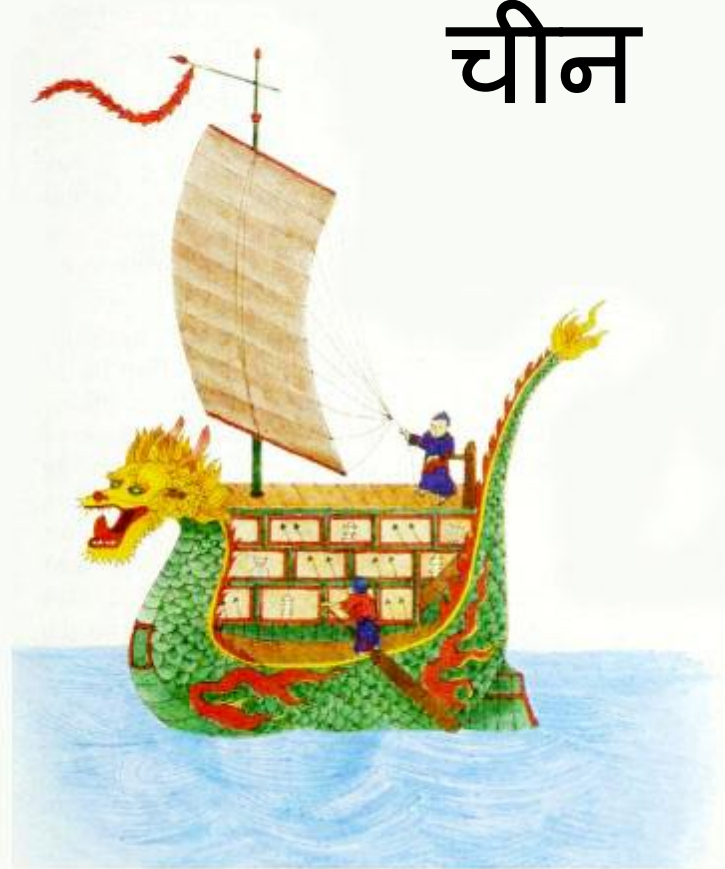
1. उभरता हुआ चाइना

चीनी अपने देश को "चुंग कूओ" यानि केंद्रीय राष्ट्र कहते हैं. यह नाम हमें चिन वंश की याद दिलाता है. चिन राजवंश शासकों का एक परिवार था. चिन सम्राट ने 221 ईसा पूर्व, प्राचीन यूनानियों और रोमनों के दिनों में, चीन की ज़मीन का एकीकरण किया था.

उनके पहले अन्य राजवंश थे. चाऊ लगभग 1000 ईसा पूर्व, डेविड और सोलोमन के समय में वहां राज्य करते थे. उनसे पहले भी, शांग वंश के दौरान (जो तुतनखामुन के मिस्र के राजा बनने से पहले शुरू हुआ था) चीनी विकासशील थे और वे दीवारों वाले शहरों में रह रहे थे, बांस पर लिख रहे थे और रेशम का कपड़ा बना रहे थे.

चिन एकीकरण के बाद, सबसे प्रसिद्ध राजवंश थे - हान, पैंग, गाया और मिंग. हान, ईसा-मसीह के जीवन के दोनों ओर लगभग दो शताब्दियों तक वहां रहे. पैंग (618-907 ई) पैगंबर मोहम्मद के समय से शारलेमेन तक वहां रहे. तब चीन में उतने लोग थे जितने लोग आज इंग्लैंड में हैं. सुंग काल, ग्रीनलैंड और अमेरिका के लिए वाइकिंग यात्राओं, और क्रूसेड का समय था. जबकि मिंग साम्राज्य 14 वीं शताब्दी से कोलंबस से लेकर अंग्रेजी गृह-युद्ध तक चला.

इस लम्बे काल में चीनी लोगों की संख्या लगातार बढ़ती रही. आज चीन की पूरी दुनिया में सबसे बड़ी आबादी है. चीन में 1300 मिलियन से ज़्यादा लोग रहते हैं. लॉस-एंजिल्स से लंदन तक हम कहीं भी चीनी भोजन खा सकते हैं, चीनी बोली सुन सकते हैं और चीनी लिखाई देख सकते हैं.

यह ग्राफ पेपर 100-मिमी x 40-मिमी का है.
इसमें 4 ,000 छोटे चौकोन हैं.
1-मीटर x 1-मीटर के ग्राफ पेपर में दस लाख छोटे चौकोन होंगे.
अगर आप सभी चीनी नागरिकों को छोटे चौकोन से दिखाना चाहते हैं तो उसके लिए आपको 1300 मीटर लम्बे ग्राफ पेपर की ज़रुरत पड़ेगी.

केंद्र और दक्षिण के जंगल ज्यादातर नष्ट हो गए हैं, पर पश्चिम में जंगल अभी भी बाकी हैं. जहाँ यांग्त्ज़ी और सेचवान बेसिन शीतल हिमालय पर्वतों की ओर बढ़ती हैं, वहाँ अजीब जानवर अभी भी बचे हैं: पहाड़ी बकरी - मृग, सुनहरे साँप, चपटी नाक वाले बंदर और विशालकाय पांडा.

पांडा को वहां के बादलों से भरे जंगलों के बांस खाने में बहुत मज़ा आता है. इसलिए उन्हें चीन के बाहर रहना मुश्किल लगता है. लेकिन वहां के सजावटी तीतर बड़ी सफलता के साथ उत्तरी अमेरिका और यूरोप में जीवित रहे हैं.

2. चीन की भूमि

चीन, जो दुनिया के सबसे बड़े देशों में से एक है, भूगोल में बहुत भिन्न है, तिब्बत के ग्लेशियरों से लेकर चीन सागर द्वारा भाप से भरे डेल्टा-भूमि तक उसका विस्तार है.

उत्तर में मंचूरिया और मंगोलिया के घुमावदार मैदान हैं जो एक कभी उग्र घुड़सवारों के घर थे. यह चीनी सभ्यता का उद्गम स्थल है जहां की जलवायु सुखदायी है और पीली नदी के किनारे की मिट्टी समृद्ध है. इसके अलावा दक्षिण में पहाड़ियों, मैदानों और झीलों का एक विशाल क्षेत्र है, जो यांग्त्ज़ी नदी के केंद्र में है. यहाँ की जलवायु काफी नम और गर्म है, और आमतौर पर यहाँ वर्षा अधिक होती है. यहाँ चावल मुख्य फसल है, जबकि उत्तर में गेहूं, बाजरा और फलियां होती हैं.

नदियाँ हमेशा से ही चीनियों के लिए महत्वपूर्ण रही हैं. सबसे समृद्ध खेत उस मिट्टी से बने हैं जिसे नदियों ने वहां जमा किया है. इस सामग्री में से कुछ "लोस" के रूप में शुरू हुई. यह धूल, हिम-युग के दौरान ग्लेशियर के चारों ओर से नंगी भूमि पर हवा में उड़कर आई होगी. चीन में यह मिट्टी काफी मोटी है. जहां नदियां घाटी को काटती हैं, वहां लोगों ने गुफायों में अपने घर बनाए जो सर्दियों में गर्म और गर्मियों में सुखद रूप से ठन्डे रहते थे.

लोगों ने नदियों में नावों के द्वारा यात्रा भी की. पुराने काल से ही चीनियों ने इन्हें नहरों से जोड़ा. 486 ईसा पूर्व में “वू” के राजकुमार ने पहला व्यावहारिक अंतर्देशीय जलमार्ग बनाया जिसे अब भी ग्रैंड-कैनाल के एक हिस्से के रूप में उपयोग किया जाता है. यह कैनाल, हैंगिंग को पेकिंग से जोड़ता है.

नदियों ने समस्याएं भी पैदा कीं. चीनियों ने इन्हें सुलझाने में बहुत कुशलता दिखाई. बहुत प्राचीन समय से उन्होंने घाटियों को पार करने के लिए बांस और तारों से "सस्पेंशन पुल" बनाए. उन्होंने पहला सफल "सस्पेंशन पुल" पश्चिमी श्रृंखला में ग्यारह सौ साल पहले, 600 ईस्वी में तक 100 मीटर की खाई को पार करने के लिए लोहे की जंजीरों से बनाया.

बाढ़ नियंत्रण हमेशा से उनकी मुख्य कठिनाई रही है. उदाहरण के लिए, हर साल येलो रिवर, 'चीन का दुःख' नाम की नदी एक हजार मिलियन टन पीली मिट्टी बहा कर लाती है. यह मिट्टी खेतों के स्तर से ऊपर आकर पड़ती है, जिससे नदी के किनारों के फटने से भयावह बाढ़ आती है. फिर चिन राजवंश के एक इंजीनियर ली पिंग के दिमाग में यह सही विचार आया: 'बाँध को नीचा रखें, और चैनल को गहरा खोदें.' हालांकि आधुनिक ड्रेजर्स के साथ भी यह काम कठिन होता.

एक नदी के ऊपर बाँध
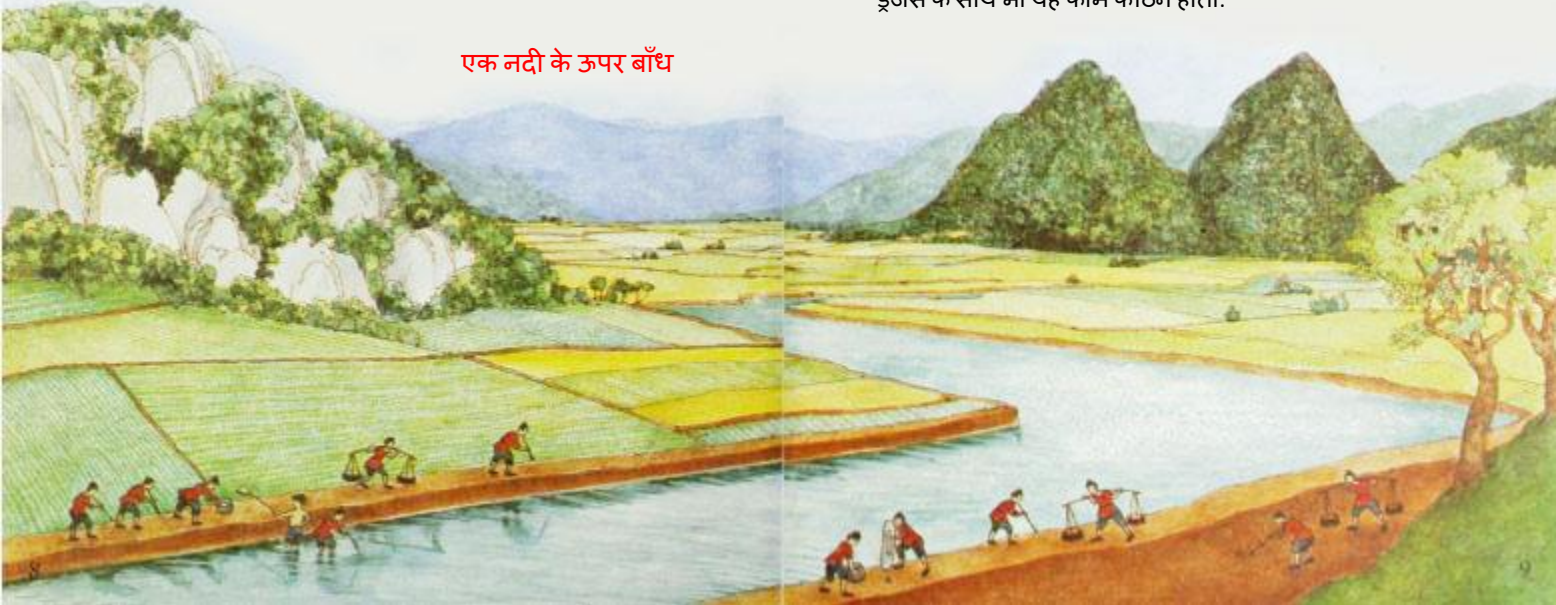
बाढ़ एक समस्या थी, पर साथ में सूखा भी. एक लोककथा बताती है कि हॉर्स ईयर माउंटेन के किसान भूखे मर रहे थे, उनकी ज़मीनें सूखी और उजड़ी हुई थीं.

तब सी-गर्ल नामक एक किसान की बेटी को पहाड़ों में एक गुप्त झील चमकती हुई मिली. उस पर पहरा देने वाले जंगली हंस ने उसे बताया कि झील को केवल सोने की चाबी से खोला जा सकता है, लेकिन उसे यह नहीं बताया कि वो चाबी उसे कहां मिलेगी. फिर तीन तोतों ने उसे ड्रैगन किंग की तीसरी बेटी की तलाश करने भेजा. एक मोर उसे दक्षिणी पहाड़ों के घाटी में ले गया, और उसने यह भी समझाया कि ड्रैगन किंग की तीसरी बेटी को लोकगीत पसंद थे.

सी-गर्ल ने तीन दिनों तक लोकगीत गाए, उसके बाद वह प्रकट हुई और इसमें शामिल हो गई (हालांकि उसके पिता ने उसे मना किया था). वे दोस्त बने और जब सी-गर्ल ने उसे पूरी बात बताई फिर उन्होंने एक योजना बनाई.

फिर वे बहुत जोर से एक साथ गाते रहे. उससे राजा के खजाने की रक्षा करने वाली हत्यारी चील ने जांच करने के लिए उड़ान भरी.

तीसरी बेटी ने उसे गाते हुए उलझाए रखा, और उस बीच सी-गर्ल खजाने में घुसकर चाबी लाई. चूंकि सबकुछ ठीक-ठाक था और सभी गहने अपनी जगहों पर थे इसलिए चील को कुछ भी गड़बड़ नहीं लगा. फिर उन्होंने झील को खोला.

उससे ग्रामीणों को बचा लिया गया, लेकिन ड्रैगन राजा बहुत गुस्सा हुआ. उसने अपनी बेटी को घर से निकाल दिया. फिर वो सी-गर्ल के साथ रहने के लिए गई.

वे अभी भी एक साथ गाना गाती हैं. हर साल सातवें महीने के बाइसवें दिन, हार्स ईयर माउंटेन पर सभी महिलाएं धन्यवाद कहने के लिए वहां इकट्ठी होती हैं.

हॉर्स ईयर माउंटेन की भूमि की तरह, फसलों को उगाने के लिए चीन को सिंचाई चाहिए. वास्तव में लंबे इतिहास में चीन का दृश्य सिंचाई द्वारा बदल गया है. उत्तर में गेहूं और बाजरा पंक्तिबद्ध क्यारियों में उगाई जाती है, और उसे सावधानी से पानी दिया जाता है. दक्षिण में जहाँ पानी भरपूर मात्रा में है, वहाँ के सीढ़ीदार धान के खेतों की बहुलता है, और ज़रुरत पड़ने पर चावल के पौधों को पानी दिया जा सकता है.

Planting rice
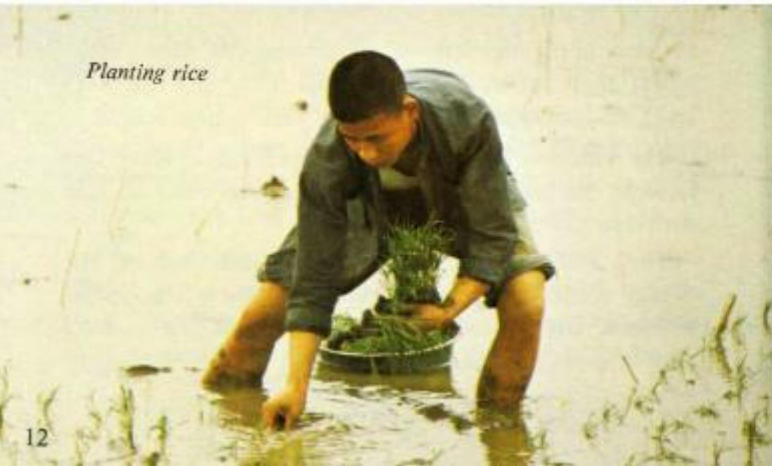
चावल, चीन का सबसे महत्वपूर्ण भोजन है. उसकी प्रागैतिहासिक काल से खेती की गई है. कुछ लोककथाओं के अनुसार यह देवी कुआन लिन का उपहार थीं.

अन्य लोककथाओं के अनुसार चावल एक कुत्ते की भेंट था. इन कहानियों के अनुसार पानी से पूरी दुनिया डूब रही थी. यू (जो स्वयं एक ड्रैगन पैदा हुआ था) ने पानी को वापस समुद्र में डाला. नहरों को खोदने के लिए उसने ड्रैगन की पूंछ का उपयोग किया और खुद भालू बनकर पहाड़ों के अंदर सुरंगों में गया.

बाढ़ ने सभी पुराने पौधों को नष्ट कर दिया था, और लोग केवल शिकार करके रह सकते थे, क्योंकि वहां नए पौधे ही नहीं थे.

फिर एक दिन एक कुत्ता पानी से भरे खेत से बाहर निकला. उसकी पूंछ से बीजों के पीले गुच्छे लटक रहे थे. लोगों ने इन्हें गीले खेतों में लगाया और उससे चावल उग आए. इस कहानी को मानने वाले लोग, हमेशा खुद खाने से पहले कुत्ते को भोजन खिलाते हैं.

3. प्राचीन विश्वास

इन लोककथाओं के अलावा भी, चीनियों में कई प्रकार के विश्वास और धर्म थे. इनमें से कुछ को उनके यात्री और अन्वेषक वापस लाए. पहली शताब्दी तक महान बौद्ध धर्म, भारत से चीन पहुंचा और वहां यह धर्म धीरे-धीरे बदला और फिर अपने नए चीनी रूप में, दक्षिण-पूर्व एशिया के अधिकांश हिस्सों में फैला. इसके फलस्वरूप सुंदर "पैगोडा" जैसे मंदिरों का निर्माण हुआ जिनमें चीनी टॉवर-निर्माण तकनीकों और धार्मिक भारतीय विचारों का सम्मिश्रण हुआ.

समर पैलेस में मुख्य "पैगोडा" पेकिंग में

एक अन्य धर्म, कन्फ्यूशियस के विचारों पर केंद्रित था. ग्रीस के कुछ प्राचीन दार्शनिकों जैसे ही कन्फ्यूशियस 500 ईसा पूर्व के आसपास चीन में रहता था. उसने भी पश्चिम के विचारकों की तरह पूरी दुनिया को प्रभावित किया. उनके विचार और सीखें अन्य धर्मों की तरह ही सार्वभौमिक मानव आदर्शों पर आधारित हैं (उदाहरण के लिए, 'दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करें जैसा आप दूसरों से उम्मीद करते हैं'). उनके विचार माता-पिता और पूर्वजों के सम्मान की मजबूत चीनी परंपरा से भी जुड़े हैं.

पुराने चीन में, अक्सर परिवारों के अपने देवता होते थे. वहां छोटी मूर्तियां दरवाजों की सुरक्षा करती थीं, और घर के प्रत्येक विभाग की देखभाल और रसोई की देखभाल के लिए विशेष देवता होते थे. चीनियों ने अपनी सिविल प्रशासनिक सेवा में भी साफ-सुथरे संगठन का परिचय दिया. यह काफी जटिल था लेकिन देश को चलाने में बहुत कुशल था. उन्होंने यह भी कल्पना की कि स्वर्ग एक दिव्य नागरिक सेवा द्वारा चलाया गया था, और निश्चित रूप से नर्क में दंड के हकदारों की सूची (रजिस्टर) रखने की जरूरत थी.

मेन-शेन, दरवाजे के संरक्षक (घरेलू देवता)

चीनियों के पास बंदर की एक पसंदीदा कहानी है, जो हंसमुख भी था और अराजक ताकतों का प्रतिनिधित्व भी करता है.

उसने राज्य में सभी अन्य बंदरों को संगठित करना शुरू किया. उसका लक्ष्य दुनिया पर कब्जा करना था ... लेकिन फिर वो नशे में धुत्त हो गया, और उसे नर्क में ले जाया गया. नीचे उसने अपनी जंजीरों को तोड़ा और फिर उसने "जज ऑफ हेल" (नर्क के जज) के रजिस्टर को चुराया जिससे वो सभी कैद बंदरों के नामों को काट सके.

फिर वह थोड़ा संभल गया. लेकिन जब उसने स्वर्ग को तोड़ना शुरू किया, तो स्वर्गीय मेज़बान ने उसे दो बार माउंट हुआकुओ में घेरा! उन्होंने दूसरी बार उसे पकड़ लिया और जेड सम्राट ने उसे मौत की सजा सुनाई.

उन्होंने उसे एक कीमियागर की भट्टी में पिघलाने की कोशिश की, जिसे सैंतालीस दिनों तक सफेद गर्म किया गया. पर उससे उसकी मौत नहीं हुई क्योंकि दो घेराबंदियों के बीच उसने स्वर्ग का आड़ू खा लिया था जिसने उसे अनन्त जीवन प्रदान किया.

जब बन्दर ने स्वर्ग को पूरी तरह से नष्ट करने की धमकी दी, तो बुद्ध ने हस्तक्षेप किया और उसे एक जादू के पहाड़ के अंदर बंद कर दिया. चीन के लिए भारत से पवित्र बौद्ध धर्मग्रंथ लाने के लिए अच्छे थांग-सेंग की मदद करने के लिए आखिर में उसे छोड़ दिया गया.

शुरू करने से पहले, थांग-सेंग ने बुद्धिमानी से बंदर के सर एक हेलमेट लगाया जो दुष्टता के समय उसके सिर को निचोड़ देता.
पर उस लम्बी यात्रा की सभी मुसीबतों में बंदर ने इतनी ईमानदारी से मदद की, कि वापस लौटने पर उसे सभी शरारतों के लिए माफ कर दिया गया और उसका हेलमेट गायब हो गया.

जज ऑफ हेल

बुद्ध ने थांग-सेंग के घोड़े को पुरस्कृत किया, उसे एक अजगर में बदला और फिर उसे आकाशीय ड्रेगन का प्रमुख बना दिया. ड्रेगन बहुत सारी चीनी कहानियों में दिखाई देते हैं. हमारी परियों की कहानियों में ड्रेगन आमतौर पर उग्र और गंदे होते हैं, लेकिन चीनी ड्रेगन बादलों या पानी में रहते हैं और अच्छा भाग्य लाते हैं.

ड्रैगन के लिए शब्द "लंग" है, और उनके पांच मुख्य प्रकार थे. सम्राट के प्रतीक इम्पीरियल ड्रेगन के प्रत्येक पैर में पांच पंजे थे. बाकी सिर्फ चार पैर वाले ड्रेगन थे. स्वर्ग के ड्रेगन ने देवताओं की हवेलियों पर पहरा देते थे.

आध्यात्मिक ड्रेगन हवा और बारिश की देखरेख करते थे और फसलों को पानी देने में मदद करते थे. कभी-कभी वे बाढ़ भी लाते थे जो शायद एक दुर्घटना होगी. सांसारिक ड्रेगन नदियों को साफ करते, समुद्र को गहरा करते, और यू जैसे लोगों की बाढ़ नियंत्रित में मदद करते थे.

ट्रेजरी के ड्रैगन्स छिपे हुए खजाने पर नज़र रखते थे और अगर आप खजाने के असली मालिक नहीं हों, तो वे आपके साथ गलत व्यवहार भी कर सकते थे.

सामान्य तौर पर ड्रेगन उत्साह और शुभकामनाओं के प्रतीक थे, इसलिए ड्रैगन पतंगें हमेशा चीनी लड़कों और लड़कियों को पसंद रहीं. ड्रेगन की छाप को अक्सर मिट्टी के बर्तनों पर भी चित्रित किया गया. चीनी नव-वर्ष आतिशबाजियों के साथ मनाया जाता है, तब सड़कों पर बड़े लम्बे-लम्बे पेपर ड्रैगन्स को लोग, छलांग लगाते हुए लंबी श्रृंखलाओं में जलूस में लेकर जाते हैं. इसे हाल के वर्षों में अमेरिका और इंग्लैंड में भी देखा जा सकता है जहां 'ड्रैगन के पैर' अक्सर चीनी रेस्टोरेंट्स के वेटर होते हैं.

लंदन में एक चीनी पेपर ड्रैगन

मछली के आकार का लोहे का
तैरता कम्पास, 1044 ए डी

13वीं सदी का एक चीनी सुई कम्पास

इनमें क्षतिग्रस्त जहाजों को डूबने से बचाने के लिए वाटरटाइट डिब्बे और स्टीयरिंग के लिए साधारण पतवार भी शामिल थी. इनका उपयोग चीन में एक हजार से अधिक वर्षों पहले हो रहा था. जब जूलियस सीजर ने पश्चिम में ब्रिटेन पर आक्रमण किया, तब चीन में इनका उपयोग हो रहा था.

एडमिरल चेंग-हो के समय तक चीन के जहाज़ (जंक) एक हजार लोगों को कई हफ़्तों की आपूर्ति के साथ ले जा सकते थे. वे प्रशांत में उत्तर से साइबेरियाई के फर लाने जाते. वे पश्चिम में भारत, अरब, यहां तक कि मेडागास्कर और अफ्रीका के दक्षिण छोर तक गए, खुले समुद्रों में अपने कम्पास द्वारा गए.

यदि कोई सम्राट विशेष रूप से अच्छा शासक होता, तो ची-लिन नामक एक शानदार जानवर उसे दिखाई दे सकता था. यह अजीब सींग और पीले धब्बों वाला विशाल पर शांत और दयालु जानवर था. इस बात पर शायद कोई कभी भी विश्वास नहीं करता. पर फिर कुछ चीनी नाविक उनमें से एक जानवर को घर लाए! जिराफ वास्तव में एक बहुत ही अप्रत्याशित जानवर था. नाविक, 15 वीं शताब्दी की शुरुआत में एडमिरल चेंग-हो के साथ अफ्रीका गए थे.

कुछ पश्चिमी लोगों को इस बात का सही एहसास था कि चीनी नौसेना निश्चित रूप से 1000 ई से 1492 में कोलंबस के बीच के काल में दुनिया में सबसे शक्तिमान नौसेना थी.

उदाहरण के लिए, चुंबकीय कम्पास शुरु में चीन से आया. हालांकि चीनी नावें (जंक) बहुत अलग दिखती हैं, लेकिन पश्चिमी जहाजों में इस्तेमाल किए जाने वाले कई महत्वपूर्ण हिस्से पहले चीनियों द्वारा आविष्कार किए गए थे.

वर्तमान में चीन के जहाज़ (जंक)

4. युद्ध और शांति में अन्य लोगों से संपर्क

हम यह भूल जाते हैं कि यूरोप को चीन द्वारा खोजा गया था. शुरुआती चीनी खोजकर्ता ज़मीन से होकर बड़ी दूरी तक गए. 130 ईसा पूर्व चांग-चिएन ने एशिया से होकर यात्रा की और यूरोप के बारे में पता किया. फिर वो भारत के रास्ते में ग्रीक बैक्ट्रिया आया जो उस समय सिकंदर महान के सैनिकों द्वारा स्थापित एक कॉलोनी थी.

रोमन काल में भी, चीन की पूरी सेनाएं पश्चिम में बहुत दूर जा रही थीं. 97 ईस्वी में चीनी सेना कैस्पियन सागर तक आई जो वर्तमान में सोवियत क्षेत्र है. जब अरब, अपने नए धर्म इस्लाम का प्रसार कर रहे थे, तो वे एक चीनी सेना से मिले. उन्होंने 751 ईस्वी में, समरकंद के उत्तर-पूर्व में तलास की लड़ाई में उन्हें रोका.

यह जानना अचरज भरा होगा कि यदि चीनी जीत जाते तो पश्चिमी सभ्यता का क्या हुआ होता, क्योंकि तब तक अरब साम्राज्य ने स्पेन पर कब्जा कर लिए था और तब वे फ्रांस की ओर बढ़ रहे थे.

बेशक सभी संपर्कों में युद्ध नहीं हुआ होगा. जैसा कि हम देखेंगे, तब चीनी सामान, प्राचीन रोम तक पहुंच गया था. रोमन सिक्के दक्षिण-पूर्व एशिया में भी पाए जाते हैं. निर्यात और धन का व्यापार संभवतः कई हाथों से होकर गुज़रता था. जहाँ तक हम जानते हैं, इटली में तिबेर नदी पर न तो किसी चीनी ने और न ही मेकॉन्ग नदी पर किसी इतालवी ने व्यक्तिगत रूप से अपनी दूकान स्थापित की थी. पर माल के आवागमन के साथ-साथ समाचार और विचारों का ज़रूर आदान-प्रदान हुआ होगा.

हालांकि चीनी बाहर की ओर विस्तार कर सकते थे, पर उन्हें अपने घरों में अक्सर उत्तर की जनजातियों द्वारा छापा मारने का खतरा था.

कभी-कभी इन खानाबदोश घोड़ों-योद्धाओं ने जीत भी हासिल की. महान मंगोल युद्ध-स्वामी - कुबलाई खान एक बार पूरे चीन के सम्राट भी बना. पर अक्सर चीनी अपने दुश्मनों को बाहर रखने में सक्षम रहे. ऐसा करने के लिए उन्होंने किलेबंदी की एक श्रृंखला विकसित की जो धीरे-धीरे चीन की महान दीवार में विकसित हुई. यह दीवार लगभग 2400 किलोमीटर लंबी है. यह लंदन से रोम की दूरी से लगभग दो-गुनी है. उसकी तुलना में इंग्लैंड में रोमन दीवार बहुत छोटी है! चीन की महान दीवार का निर्माण 214 ईसा पूर्व में शुरू किया गया था, लेकिन उसमें ज्यादातर काम मिंग राजवंश (मुख्य रूप से यूरोपीय मध्य युग) में हुआ.

चीनी बहुत पहले से ही दीवारों का निर्माण कर रहे थे. शांग वंश की शुरुआत लगभग 1600 ईसा पूर्व हुई, तब स्टोनहेंज इंग्लैंड में काफी नया था. शांग की राजधानी चेंग-चाउ में 7.2 किलोमीटर लंबी शहर की दीवार थी. वो अभी भी 9 मीटर ऊंची है, और 36 मीटर चौड़ी है. इसमें लगभग 3 मिलियन टन मिट्टी का उपयोग हुआ होगा. चीनी पुरातत्वविदों के अनुसार इसे बनाने में लगभग 10,000 लोगों को बीस वर्ष लगे होंगे.

रोमन काल में, हान राजवंश द्वारा, एक शाही राजधानी, चांग-एन में 24 किलोमीटर लम्बी शहर की दीवारें थीं. और अधिक सुरक्षा के लिए, भीतर के क्षेत्र को 160 वार्डों में विभाजित किया गया था, और प्रत्येक की अपनी दीवारें और रात में सुरक्षा गेट थे.

चीन की महान दीवार

9 वीं शताब्दी तक चीनी कीमियागार कुछ पदार्थों को आपस में न मिलाने की चेतावनी दे रहे थे. उन पदार्थों को आपस में मिलाने से विस्फोट होता था और उनकी दाढ़ी के जलने का डर था. गनपाउडर की खोज की गई, और जल्द ही बांस की ट्यूबों से रॉकेट बनाए जा रहे थे. 'वुडन-बैलों' (पहिएदार वाहन, जो एक चीनी आविष्कार भी थे) पर लगे युद्ध-रॉकेट लांचर ने मोबाइल बैटरियों का अनुसरण किया.

1230 तक सुंग वंश ने मंगोलों के खिलाफ अपने अभियान में एक शानदार विस्फोट का उपयोग किया. उसके एक शताब्दी के अंदर असली तोपें दिखाई दीं.

यद्यपि बारूद एक चीनी आविष्कार लगता है, किसी को भी यह निश्चित पता नहीं है कि धातु की नलियों में इसका उपयोग करने की धारणा चीनी लोगों के बीच या अरब, या यूरोप में शुरू हुई. लेकिन लंबी दूरी तक आग फेंकने की इस तकनीक ने यूरोपीय इतिहास को निश्चित रूप से बदला.

अंग्रेज वैज्ञानिक फ्रांसिस बेकन का मानना था कि बारूद, छपाई और चुंबकीय कम्पास - इन तीनों आविष्कारों ने, पश्चिमी इतिहास को बदल दिया था. अब हम जानते हैं कि यह सभी पहली बार चीनियों द्वारा खोजे गए थे.

कुछ आधुनिक इतिहासकार इससे भी आगे जाते हैं. वे सुझाव देते हैं कि घुड़सवार का रकाब (स्टिरप) एक अन्य चीनी विकास था, और उसने सचमुच में काठी में शूरवीरों को बांधे रखा. मध्ययुगीन यूरोप में घोड़े तब तक हावी रहे जब तक कि बारूद नहीं आया. उसने महल के गढ़ों को कमजोर बना दिया.
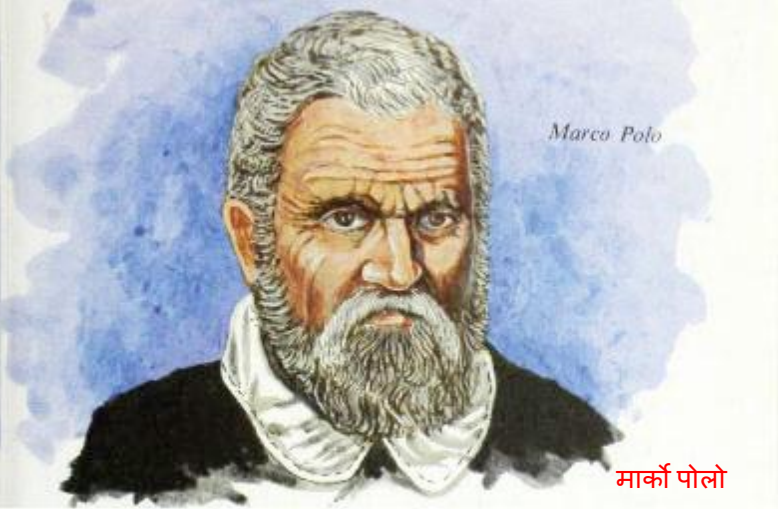
हालांकि कुछ महान लड़ाइयों के शांतिपूर्ण परिणाम भी निकले. 13वीं शताब्दी में जब कुबलाई खान ने खुद को चीन का सम्राट बनाया, तब मंगोलों ने एक विशाल साम्राज्य पर विजय प्राप्त की जो पूरे एशिया और यूरोप की सीमाओं तक पहुँचा था. इसका मतलब यह था कि यदि आपके उनके साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध थे, तो वे आपको पूरे चीन की यात्रा करने के लिए सुरक्षा प्रदान कर सकते थे.

मार्को पोलो ने यही किया. वह वेनिस से एक इतालवी व्यापारी था. जब वो अपने पिता निकोलो और चाचा मफिओ के साथ चीन की यात्रा के लिए निकला, तब वो सिर्फ सोलह साल का था. 1294 में जब वो वापिस लौटा तो वो चालीस साल का था.

उसकी पुस्तक "कैथे" (वो चीन को इस नाम से बुलाता था) मध्ययुगीन यूरोप में एक बेस्ट सेलर पुस्तक थी. आप उसे अभी भी पढ़ सकते हैं.

क्रिस्टोफर कोलंबस के पास उसकी एक प्रति थी, जिस पर उन्होंने सावधानीपूर्वक नोट्स लिखे थे. "कैथे" पढ़कर वो के एक पश्चिम मार्ग की तलाश में था जब उसने गलती से अमेरिका की खोज की.

मार्को की पुस्तक ने यूरोपीय लोगों को चीनी जीवन की असाधारण विचित्रता और समृद्धि का अच्छा अंदाज़ दिया. उसने चीज़ों को बढ़ा-चढ़ा कर लिखा (उन्हें बड़ी संख्यायें पसंद थीं), लेकिन कभी-कभी उन्हें भी चीन की प्रभावशाली चीज़ें और बातें समझ में नहीं आईं. हालांकि चीनी ग्रैंड-कैनाल ने उनका ध्यान आकर्षित किया क्योंकि वे एक वेनिस निवासी थे (वेनिस में नहरे आम हैं), उन्होंने यह महसूस नहीं किया कि ग्रैंड-कैनाल सैकड़ों साल पुराना था.

जब मार्को अंत में घर गया, तो वहां उसका बहुत स्वागत नहीं हुआ. असल में जब वो इतालवी जेल में बंद था तब समय गुजारने के लिए उसने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक लिखी थी!

कुछ लोगों के अनुसार मार्को पोलो, चीन से इटली में "स्पेगेटी" का विचार लाया. पर मुख्य रूप से वर्तमान शताब्दी में अधिक संपर्क के बाद ही चीनी भोजन और चीन की संस्कृति पश्चिम के लोगों के बीच लोकप्रिय बनी है.

चीनी भोजन की मुख्य बात यह है कि वो अलग-अलग खाद्य पदार्थों का स्वाद और उनका कुरकुरापन या नरमपन बाहर लाता है. इसके लिए, खाद्य पदार्थों को एक-साथ पकाने के बजाय उन्हें अक्सर अलग-अलग व्यंजनों में पकाया और परोसा जाता है. वे फिर एक-साथ खाए जाते हैं, इस उससे हर कौर में एक विशेष स्वाद आता है.

ताजा जायके को संरक्षित करने का चीन में एक पसंदीदा तरीका है. वे बहुत पतली-पतली कटी सब्जियों को बहुत तेज़ गर्म तेल में भूनते हैं उन्हें लगातार चलाते हैं ताकि वे अंदर से पूरी तरह पक सकें.

तैरता हुआ रसोईघर

सीजनल चीनी व्यंजन भी अच्छे होते हैं भी, और उनमें कम-से-कम एक चीनी भोजन "लाल" व्यंजन होता है होता है, जिसे सोया सॉस में पकाया जाता है. एक पारंपरिक मांचू भोज में, तीन सौ से अधिक विभिन्न व्यंजन हो सकते हैं.

ऐसा कहा जाता है कि चीनी लोग, सभ्य लोगों और बर्बर लोगों को, उनके खाने के तरीके के अनुसार अलग-अलग करते थे. जो चॉपस्टिक से खाते थे वे सभ्य थे, और उँगलियों से खाने वाले बर्बर थे (बाद में, चाकू और कांटे भी नीचता का प्रतीक थे!)

चॉपस्टिक से ठीक तरह से भोजन खाना भी एक कला है. आप चॉपस्टिक को एक चिमटी जैसे पकड़ें लेकिन दोनों उँगलियों को एक-साथ न चलाएं, एक ऊंगली को स्थिर रखें. स्थिर उंगली को "वी" आकार में पकड़ें जहां अंगूठा और तर्जनी मिलती हो, और उसे तीसरी उंगली से स्थिर करें. फिर अंगूठे और तर्जनी की पोरों के बीच दूसरी चॉपस्टिक ले लो, और इसे अपनी मध्य उंगली का उपयोग करके इसे अंदर-बाहर जाने दें.

भोजन के उपरांत आप चावल की वाइन, या ग्रीन-टी पी सकते हैं.

चाय के कप के बिना अंग्रेजों की कल्पना करना भी मुश्किल है लेकिन चाय पीने की आदत अंग्रेजों ने चीनियों से सीखी. 18वीं शताब्दी तक यूरोप और अमेरिका में बहुत कम चाय पी जाती थी. चाय लंबे समय तक दुर्लभ और बहुत महंगी थी.

ब्रिटिशों द्वारा आयात पर कर लगाने से कीमते और बढ़ाने के कारण 'बोस्टन टी पार्टी' घटी. अमेरिकियों ने इंडियंस का नकाब पहनकर चाय के बक्सों को बंदरगाह में फेंक दिया. इस प्रकार चीनी चाय ने उन घटनाओं में से एक को जन्म दिया, जिसके कारण अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम हुआ.

जब विक्टोरिया एक युवा रानी थी, तब तक दुनिया की पूरी चाय सिर्फ चीन में ही उगाई जाती थी. इसके तुरंत बाद चाय को भारत में असम और सीलोन (श्रीलंका) में उगाया जाने लगा, लेकिन अपने विशिष्ट स्वाद के कारण बहुत से लोग अभी भी चीन की चाय पसंद करते रहे हैं.

आज तक के सबसे तेज और सबसे सुंदर नौकायन जहाज "टी-क्लिपर्स" भी चीन में ही बने. प्रत्येक वर्ष ताजी चाय की फसल के साथ चीन से इंग्लैंड आने वाले पहले जहाजों को सबसे सर्वोत्तम मूल्य मिले, इसलिए उन्हें रेस करने के लिए डिज़ाइन किया गया. "टी-क्लिपर्स" पृथ्वी की लगभग दो-तिहाई दूरी की यात्रा करते थे. वे वेस्ट-इंडीज से होकर, हिंद महासागर में अफ्रीका के दक्षिणी सिरे तक, और फिर अटलांटिक की लंबाई तक भारी सामान के साथ पार करते थे. उनमें से सबसे अच्छे "टी-क्लिपर्स" इस यात्रा को कभी-कभी नब्बे दिनों से भी कम समय में पूरा करते थे और वो भी बिना किसी इंजन के, सिर्फ पवन-शक्ति पर! 1869 में, स्कॉटलैंड में निर्मित सबसे प्रसिद्ध "टी-क्लिपर्स" - "क्यूटिक सर" को संरक्षित रखा गया है और आप लंदन की टेम्स पर उसमें सवारी कर सकते हैं.

"टी-क्लिपर्स" के पीछे एक चीनी "जंक" नौका

एक 18 वीं सदी की चीनी प्लेट "स्कॉटिश हाइलैंडर्स" से सजी हुई.

इनमें से कुछ, पारंपरिक चीनी डिजाइनों की सिर्फ सस्ती नक़ल और डुप्लीकेट थे, इसलिए वे बल्कि उबाऊ थे. लेकिन कभी-कभी जब वे उनपर "टार्टन स्कॉट्समैन" की पेंटिंग करते थे तो मामला अधिक हास्यादपद हो जाता था!

पश्चिमी शिल्पकारों द्वारा चीजों को 'चीनी' दिखाने के प्रयास कभी-कभी और भी अजीब और मज़ेदार होते थे. इस "चीनी-करन" के फैशन का प्रभाव केवल वस्त्रों और फर्नीचर पर ही नहीं पड़ा; इसका असर रॉयल नेवी के जहाजों की सजावट पर भी पड़ा. 8वीं शताब्दी की शुरुआत में, पारंपरिक ब्रिटिश शेर फिगरहेड अचानक विशाल पाकीनी कुत्तों की तरह निकला. . जो इंग्लिश चैनल में धुंध से बाहर निकलते हुए, थोड़ा चौंकाने वाले लगे होंगे!

5 . चीनी कला और विज्ञान

अक्सर हम "चीनी-मिट्टी" के कपों में अपनी चाय पीते हैं. ऐसा करते हुए हम अक्सर चीन की क्रॉकरी का उल्लेख करते हैं. पूरी दुनिया "चीनी मिट्टी के बर्तन" बनाने के कौशल से बहुत प्रभवित हुई.

यह प्रभाव अलग-अलग तरीकों से व्यक्त होता है. चीनी कला मिट्टी के बर्तनों का सबसे अच्छा निजी संग्रह, पश्चिम के संग्रहकर्ताओं और संग्रहालयों में जमा है. लेकिन क्योंकि क्रॉकरी हमेशा महंगी होती थी इसलिए पश्चिमी देशों ने मिट्टी के बर्तनों (यानि क्रॉकरी) का बहुत पहले ही बड़े पैमाने पर उत्पादन शुरू कर दिया. वो कम-से-कम हमारी आँखों को, चीनी बर्तनों जैसे दिखते थे. आपकी दादी के पास शायद इस तरह की 'विलो पैटर्न' वाली क्रॉकरी अभी भी हो.

पश्चिम में क्रॉकरी के बड़े बाजार को नज़र में रखते हुए 18वीं और 19वीं शताब्दी में चीनी कुम्हारों ने पश्चिमी लोगों के लिए क्रॉकरी का निर्माण शुरू किया.

18 वीं शताब्दी के ब्रिटिश युद्धपोत पर एक चीनी प्रकार की आकृति
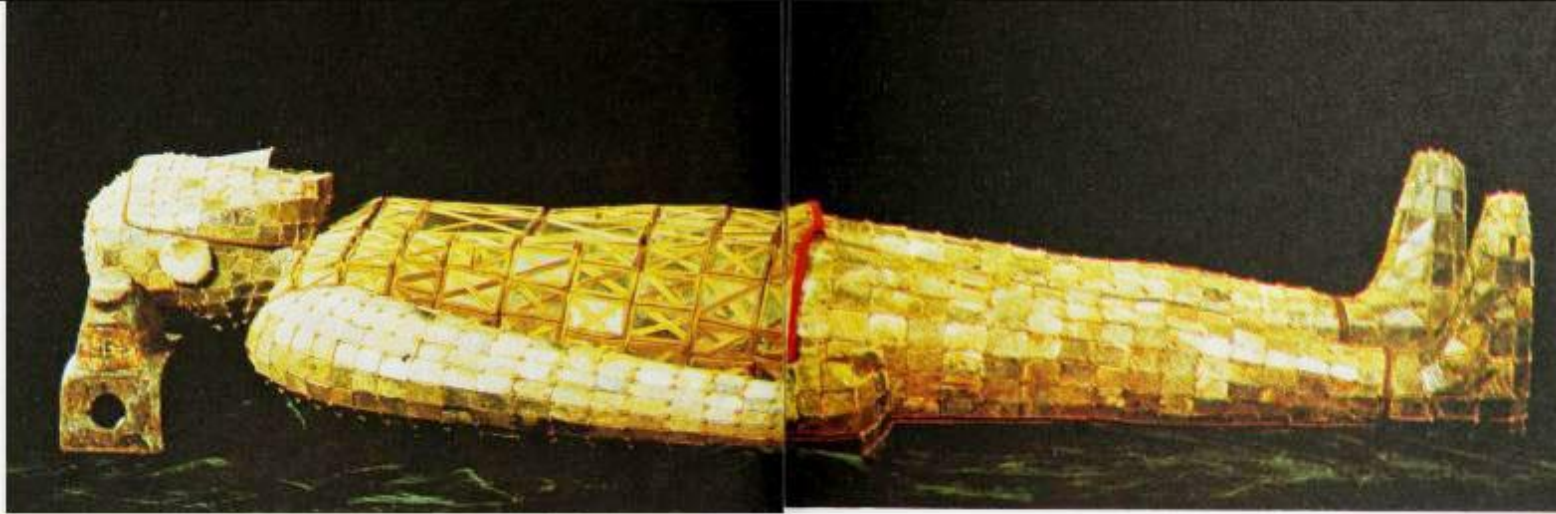
जेड राजकुमारी

चीन से पश्चिम तक पहुंचने वाली कुछ चीजें वास्तव में बहुत कीमती थीं. मिट्टी के बर्तनों के अलावा, कुछ शानदार चीज़ें - कांस्य के बर्तन और सुराही के नक्काशीदार जार थे जो लाह से सजाए गए थे. इन सामग्रियों का उपयोग देवताओं, लोगों और जानवरों की मूर्तियां बनाने में किया जाता था, जो देखने में वास्तविक और काल्पनिक दोनों थे.

इस तरह की चीजें केवल 17वीं शताब्दी के बाद ही बड़ी मात्रा में यूरोप पहुंचीं, लेकिन यूरोपीय लोग चीनी कपड़े से बहुत पहले से ही परिचित थे. पहली शताब्दी ईस्वी के पहले ही मध्य एशिया के होकर महान कारवां द्वारा रोम में चीनी रेशम आ रहा था और रोमन महिलायें उनसे कपड़े तैयार कर रही थीं. मध्य युग समाप्त होने से पहले, पोलैंड और ऑस्ट्रिया के गिरजाघरों में चीनी पक्षियों,जानवरों, जेड राजकुमारी को रेशम के पैनल पर नक़ल किया जा रहा था.

साथ में इतालवी बुनकर चीनी ड्रेगन और फीनिक्स की नकल भी कर रहे थे.

चीनी कला सामग्री में सबसे उच्च कीमत जेड (बहुमूल्य पत्थर) की थी. यह एक बहुत ही कठोर हरा पत्थर था जिसे स्पर्श करने के लिए सुखद, चिकनी आकृतियों में बनाया जाता था. चीनी परंपरा में यह पांच गुणों - दान; भरोसेमंदता, बुद्धि (सच), साहस, और निष्पक्षता का प्रतिनिधित्व करता था. इस पत्थर को लगभग अविनाशी माना जाता था और इसलिए इसे संरक्षित किया जाता था. इसलिए किसी मृत राजकुमारी को जेड प्लेटों का सूट पहनाया जाता था, और जेड नक्काशियों को उसके साथ ले जाया जाता था.

आज एक अन्य चीनी कला पश्चिम में काफी प्रशंसित है, और वह है उनकी लिखाई का तरीका. कई पश्चिमी लोग उसकी सुंदरता का आनंद लेते हैं, भले ही वे उसे समझते न हों. हमारे लिए उसे सीखना मुश्किल है क्योंकि यह हमारे लेखन से तरीके से काफी अलग है. किसी शब्द को लिखते समय हम उस शब्द की ध्वनियों को पकड़ने के लिए वर्णमाला का उपयोग एक तरह के कोड के रूप में करते हैं. हमारी वर्णमाला के अक्षर केवल चिन्ह हैं जिन्हें हम सीखते हैं. अक्षर किसी भी चीज की तस्वीरें नहीं हैं.

कभी-कभी अंतर्राष्ट्रीय सड़क संकेतों में, हम अर्थ को व्यक्त करने के लिए ख़ास चित्रों का उपयोग करते हैं. ऐसा लगता है कि चीनी लेखन ने तीन-साढ़े तीन हज़ार साल पहले इस तरह से चीजों का वास्तविक चित्रण शुरू किया होगा. उन प्राचीन चित्रों में एक पेड़ या पहाड़ी को काफी आसानी से पहचाना जा सकता है. चित्रों को बनाने में समय लगता है, इसलिए चाउ वंश के आने तक यथार्थवाद की बजाये लिखाई में कुछ निशान और चिन्ह उपयोग किये जाने लगे जिन्हें तेज़ी से बनाया जा सकता था.
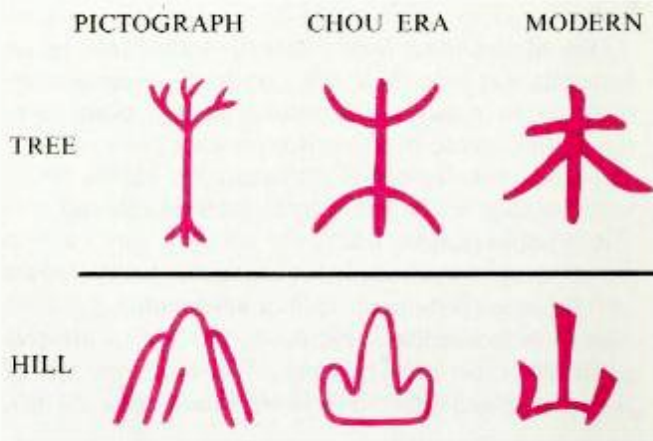
आजकल यह प्रक्रिया इतनी आगे बढ़ गई है कि यह निशान मूल रूप से चित्र थे इसका अनुमान लगाना भी मुश्किल हो गया है.

अक्सर, एक बोली जाने वाली ध्वनि के कई अर्थ हो सकते हैं. इसलिए अगर हम अंग्रेजी में 'डियर' सुनते हैं, तो इसका मतलब 'महंगा' या 'प्रिय' या 'हिरण' भी हो सकता है.
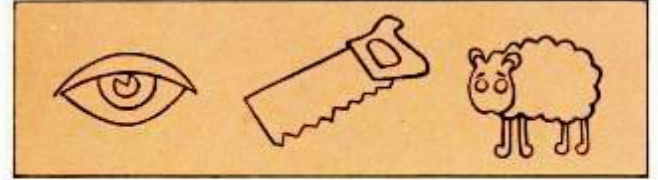
शायद आप अपने दोस्तों को इस प्रकार का कोड संदेश भेज सकते हैं. : एक आंख का चित्र, जिसके बाद एक लकड़ी-आरी और फिर एक भेड़ - इसका मतलब होगा - 'मैंने आँख से देखी भेड़'.

चीनी में भी ऐसा ही होता है: 'मा' का अर्थ 'घोड़ा' ... या 'मम्मी' होता है! पहले से याद करने के लिए 50,000 से अधिक संकेतों के साथ, और अधिक आविष्कार करने से बचने के लिए वे "पन" का उपयोग करते हैं और ध्वनि को सुराग देने वाले घोड़े के चिन्ह को दर्शाते हैं. लेकिन इसके साथ वे महिला का सावधानी से संकेत दर्शाते हैं ताकि वे संबंधित महिला के साथ किसी परेशानी में न पड़ें!

जब सभी पुस्तकों को हाथ से लिखना पड़ता था, तो यह काम इतना धीमा होता था कि उनकी बहुत कम प्रतियां ही बनाई जा सकती थीं. उससे सिर्फ कुछ ही लोगों को किताबों में संगृहीत ज्ञान का लाभ मिल पाता था. आधुनिक सभ्यता के विकास में छपाई के आविष्कार का बहुत महत्वपूर्ण रोल था.

9वीं शताब्दी में चीन में पुस्तकों के मुद्रण का काम शुरू हुआ. सबसे पहले उन्होंने प्रत्येक पृष्ठ के लिए एक बड़ा लकड़ी का ब्लॉक बनाया और उस पर सभी शब्दों को उकेरा. प्रत्येक पृष्ठ को बनाने में एक लंबा समय लगा, लेकिन इसका उपयोग सैकड़ों प्रतियों को बहुत जल्दी प्रिंट करने के लिए किया जा सका.

11वीं शताब्दी तक वे कई छोटे ब्लॉक्स को एक-साथ जोड़कर-बांधकर रखा सकता था. इस तरह से कुछ ब्लॉकों का दूसरे पन्नों में फिर से इस्तेमाल किया जा सकता था. लेकिन चूंकि उनके लेखन में हजारों संकेत शामिल थे, इसलिए इनमें से प्रत्येक के लिए चीनी में छोटे-छोटे व्यक्तिगत ब्लॉक का पूरा स्टॉक बनाना व्यावहारिक नहीं था.

पर यह सरल पश्चिमी वर्णमाला के लिए बिल्कुल संभव था. 15वीं शताब्दी के मध्य तक यूरोपीय के लोग अक्षरों के व्यक्तिगत ब्लॉक बना रहे थे, जिनका वे बार-बार उपयोग कर सकते थे. कोलंबस के अमेरिका पहुंचने से ठीक पहले आधुनिक प्रकाशन चल शुरू हो गया था. 12वीं शताब्दी तक पेपर मेकिंग यूरोप में आ चुका था. चीन यह काफी पहले से ही कर रहा था. वे 9वीं शताब्दी में कागज के नोट छाप रहे थे. 18वीं शताब्दी में ही पश्चिमी लोगों ने अपने घरों को मुद्रित वॉलपेपर के साथ सजाना शुरू किया. चीनी इसे बहुत पहले से ही कर रहे थे.

एक हज़ार साल पहले छपा प्रार्थना पत्र

पैडिल चालित युद्ध-पोत

मुद्रण के विकास ने ज्ञान के आदान-प्रदान को तेज करने में मदद की. लेकिन छपाई के फैलने से बहुत पहले ही चीन और पश्चिम के बीच विचारों का आदान-प्रदान हो रहा था.

हालांकि यह सच है कि अच्छे विचार जल्द ही फैलते हैं, लेकिन यह सुनिश्चित करना हमेशा मुश्किल होता है कि क्या कोई आविष्कार जो विभिन्न स्थानों में फैला, वास्तव में एक स्रोत से फैला या क्या उसे अलग-अलग लोगों ने स्वतंत्र रूप से इज़ाद किया. असलियत में कुछ जटिल होता है, जिसमें कोई मूल विचार अप्रत्याशित तरीके से दूसरों के साथ साझा किया जाता है.

उदाहरण के लिए, 1840 के दशक में पश्चिमी पैडल स्टीमर के शुरुआती दिनों में ब्रिटिश जहाजों की भेंट चीनी पैडल संचालित नावों से हुई, जिन्हें बहुत सारे आदमी ट्रेडमिल जैसे अपने पैरों से चलाते थे. पश्चिमी नाविकों को लगा कि चीनी लोगों ने स्टीमर की नकल करने की पूरी कोशिश की थी, बस उसमें इंजन की कमी थी. लेकिन वास्तव में चीनी, रोमन साम्राज्य के काल से ही ट्रेडमिल-पैडल व्हीलस का उपयोग कर रहे थे. क्रूसेड्स के काल में चीन में, 23 आदमी-चालित युद्धपोत थे. किसी को नहीं पता कि 16वीं सदी में इतालवी लोगों ने, शक्ति-चालित पैडल पोतों का विचार शायद चीन से ही लिया हो.

फिर भी, चीन से हमारे पास असाधारण किस्म के विचार आये - पतंग से लेकर ब्लास्ट-फर्नेस, घड़ी के यंत्र से लेकर की-स्टोन-आर्च ब्रिज (मेहराब वाले पुल) तक, सिविल सर्विस की भर्ती की परीक्षाओं से लेकर वृहत मेडिकल ज्ञान तक.

चीनी जल-घड़ी

बहुत पहले से ही चीनियों ने फलों, जड़ी-बूटियों और खनिजों के वास्तविक औषधीय गुणों के ज्ञान को खोजा था. इस तस्वीर में देवता शॉ-लाओ को आड़ू लाते हुए दिखाया गया है जो चीनियों के लिए लंबे जीवन का प्रतीक था.

यहां तक कि पौराणिक सम्राट शेन-नुंग (2700 ईसा पूर्व का शासक) के कुछ नुस्खे, जो उन्होंने मिस्र में पिरामिड बनने से पहले लिखे गए, आज भी आधुनिक डॉक्टरों द्वारा स्वीकार किए जाते हैं. उदाहरण के लिए : दवा के रूप में अफीम; पेट साफ़ करने के रूप में रबर्ब; पेट के दर्द को कम करने के लिए काओलिन (पिसी हुई मिट्टी); और अस्थमा के लिए इफेड्रिन नामक पदार्थ आदि. 16वीं शताब्दी के मध्य तक जब क्वीन एलिजाबेथ प्रथम एक युवा लड़की थी, ली-शि-चेन ने 1800 से अधिक दवाओं और जड़ी-बूटियों का वर्णन करते हुए 52 खंडों में 'ग्रेट हर्बल' लिखी जिसके कुछ चित्र दाईं ओर दिखाए गए हैं.

देवता शॉ-लाओ

दर्द निवारकों का उपयोग करने वाली सर्जरी को निश्चित रूप से चीन के लोग, प्राचीन यूनानियों जैसे बहुत पहले से इस्तेमाल करते थे. चीनियों ने सदियों से बेहतर स्वास्थ्य के लिए जिमनास्टिक अभ्यास का उपयोग किया. एक्यूपंक्चर (त्वचा को चुभाना) जो शेन-नुंग के काल से चालू है, में अब पश्चिमी चिकित्सकों की रुचि भी जगी हैं.

हम 18वीं शताब्दी के ब्रिटेन में, जेनर के साथ चेचक के खिलाफ - टीकाकरण की बात सोचते हैं, लेकिन टीकाकरण चीन में संभवतः पांच सौ साल पहले सफलतापूर्वक किया गया था जिसमें लोग चेचक की पपड़ी को सूँघते थे. .

चीनियों ने बहुत पहले ही स्वच्छता और स्वास्थ्य के बीच के सम्बन्ध को समझा था. उन्होंने टूथ-ब्रश का इस्तेमाल किया, और साथ में टॉयलेट पेपर के साथ-साथ लिखाई के कागज़ में भी वे प्रथम रहे. सीवेज और सफाई प्रणालियों और बीमारियों गंदे भीड़ वाले कस्बों की महामारी के बीच के सम्बन्ध को भी उन्होंने समझा.

6. चीनी शहर

बहुत से चीनी हमेशा से देश के छोटे गांवों में रहते थे, लेकिन 1600 ईसा पूर्व शांग राजवंश के शुरू होने के बाद से अब वहां काफी बड़े शहर हैं.

मार्को पोलो के समय तक, हैंगकोव (जिसे मार्को पोलो दुनिया का सबसे बड़ा शहर मानते थे) निश्चित रूप से दस लाख से अधिक निवासी थे. उन्होंने हर दिन दो सौ टन चावल खाया होगा. कुछ लकड़ी के बहुमंजिला फ्लैटों में रहते थे. वहां 1137 की एक भयानक आग में, दस हज़ार घर जलकर भस्म हो गए थे. उसके बाद वहां एक उचित फायर-ब्रिगेड की स्थापना की गई.

यद्यपि लोगों शहरों में दीवारों के भीतर बड़ी संख्या में रहते थे, फिर भी चीनी घरों में प्राइवेसी की भावना थी. इन घरों के केंद्र में एक आंगन था जिसे अक्सर "स्वर्ग का कुआँ" कहा जाता था और जहाँ हमेशा पौधों के साथ एक बगीचा, गमलों में छोटे पेड़ और शायद सुनहरी मछलियों का तालाब होता था.

बड़े परिवार के घर में दो आंगन होते थे. सड़क के प्रवेश-द्वार के पास सार्वजनिक आंगन होता था, जहां व्यापारियों के साथ व्यापार किया जाता था. पीछे निजी आंगन होता था, जिसमें परिवार के विभिन्न सदस्यों के कमरे खुलते थे.

पूरा घर बहुत रंगीन होता था, जिसमें चौड़ी छतें, सजी हुई लकड़ी की बीम और सुन्दर प्लास्टर की दीवारें होंगी. अंदर, अमीर परिवारों ने नक्काशी और फर्नीचर, और कढ़ाई वाले कुशन और पर्दे लगाए होंगे.

शहरों में व्यस्त बाजार थे और कारीगरों को रहने के लिए घर थे. सबसे भव्य इमारतें मंदिर और महल थे और इनमें से कुछ बेहतरीन इमारतें आज भी पेकिंग में बची हैं.
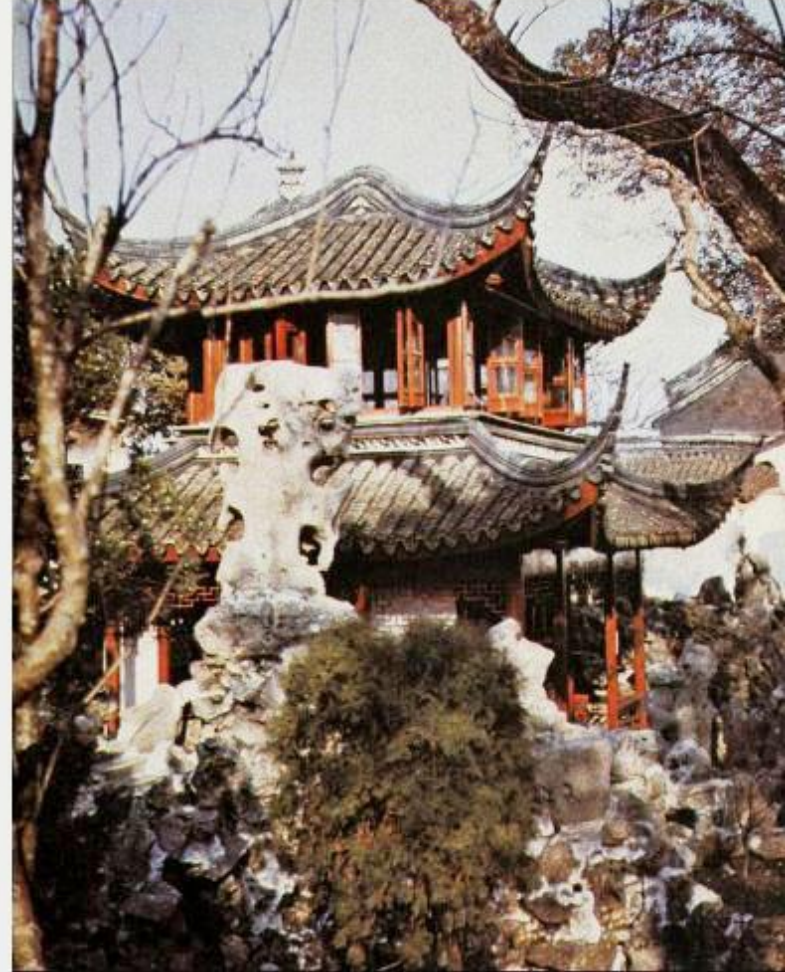
सू-चाउ का मशहूर पगोडा

पीकिंग, चीन की राजधानी है. हालांकि इसका नाम और भाग्य बदल गया है लेकिन बहुत लंबे समय से उसकी साइट पर एक शहर था. चाऊ राजवंश के दौरान भी, प्राचीन यूनानियों के समय, इस शहर ने 33 वर्ग किलोमीटर का क्षेत्रफल कवर किया था.

इसका शुरुआती नाम "ची" था. लेकिन सदियों में इसके कई अलग-अलग नाम पड़े. कुबलाई खान मंगोल, जिसकी दूसरी राजधानी ज़ानाडू थी, ने इसका नाम खानबलीक (खान-शहर) रखा. 1260 और 1290 ई. के बीच उसने पीकिंग में पहला शाही शहर और महल बनाया. उसने पारंपरिक चीनी ग्रिड पैटर्न को अपनाया जो पहली बार चेंग-चाउ में दिखाई दिया. मार्को पोलो के अनुसार वो लगभग शतरंज के बोर्ड जैसे था जिसके चौकोन 10 किलोमीटर लंबे थे.

मिंग राजवंश, ने मंगोलों के बाद पीकिंग पर कब्जा किया और पेकिंग शहर का दक्षिण में विस्तार किया.

पेकिंग का "निषिद्ध शहर" (फोर्बिडन सिटी) इंपीरियल पैलेस का क्षेत्र है. यह ऊंची दीवारों और खंदक से घिरा हुआ है, और उसे तीसरे मिंग सम्राट युंग-लो द्वारा बनाया गया था. उसने कोलंबस की यात्रा के 75 साल पहले शासन किया था लेकिन उनके द्वारा बनाई गई कई इमारतों को आज भी देखा जा सकता है.

आप दक्षिण से "मध्य-दिवस सूर्य" के द्वार से प्रवेश करते हैं. फिर आप खुद को एक शहर के भीतर दूसरे शहर में पाएंगे, वहां कांस्य के बने महान ड्रेगन शाही महल की रक्षा कर रहे होंगे. इसका उद्देश्य उसे वो स्थान बनाना था जो चीन में शक्ति का केंद्र था और जहाँ से दुनिया में शक्ति बहती थी. वो पृथ्वी पर वैसा ही था जैसे आकाश में ध्रुव तारा है.

7. नया चीन

अब चीन में एक अलग लाल सितारा है. 1949 में माओ त्से-तुंग ने पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना की घोषणा की, और देश आधिकारिक तौर पर एक कम्युनिस्ट राज्य बन गया.

हालाँकि ऐसा हुए सिर्फ 25 साल हुए हैं, चीन के लंबे इतिहास में यह एक छोटी अवधि है. चीन की प्राचीन सभ्यता ने इस अल्पकाल में कई मायनों में लोगों की जीवन-शैली में बड़े बदलाव देखे होंगे. ऐसा शायद अतीत में पहले कभी नहीं हुआ होगा.

अतीत में जब कभी भी बाहर के विश्वास और विचार चीन में आए, उन्हें आमतौर पर चीनियों ने अपने तरीके से बदला. हालांकि पुराने तरीकों में अनेकों बदलाव बड़ी तेजी से हुए, पर ऐसा लगता है जैसे चीनी लोगों ने उन्हें अपने तरीके के अनुकूल ढाला हो.

न्यू-ज़ीलैण्ड के एक उत्साही व्यक्ति ने हाल ही में लिखा कि चीन :
"अपने अतीत के सर्वश्रेष्ठ को हमेशा अपने वर्तमान में बुनता है क्योंकि वो एक अच्छे भविष्य के लिए संघर्षरत है."

वर्तमान में चीनी बच्चे

समाप्त